वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

# जल-सूक्त

(ऋग्वेद, सप्तम मंडल, सूक्त संख्या 49, मन्त्र संख्या 1 से 4 तक।)

गताङ्क से आगे

**वेदों में जल को देवता कहा गया है। जल के लिए आपोदेव नाम आया है। ऋग्वेद के चार सूक्त इसी आपोदेव को समर्पित हैं। हम इन सूक्तों में वैदिक परम्परा की दृष्टि में जल के महत्त्व पर प्रकाश पाते हैं। यहाँ ऋग्वेद से उन सूक्तों को क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।**

**समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्पुनाना यन्त्यनिविशमानाः॥**
**इन्द्रो या वज्री वृषभोरराद ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥1॥**

समुद्र जिनमें ज्येष्ठ है, वे जल प्रवाह सदा अन्तरिक्ष से आने वाले हैं। इन्द्रदेव ने जिनका मार्ग प्रशस्त किया है, वे जलदेव यहाँ हमारी रक्षा करें।

**या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति खनित्रिमा उत वा याः स्वयञ्जाः॥**
**समुद्रार्था याः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥2॥**

जो दिव्य जल आकाश से (वृष्टि के द्वारा) प्राप्त होते हैं, जो नदियों में सदा गमनशील हैं, खोदकर जो कुएँ आदि से निकाले जाते हैं, और जो स्वयं स्रोतों के द्वारा प्रवाहित होकर पवित्रता बिखेरते हुए समुद्र की ओर जाते हैं, वे दिव्यतायुक्त पवित्र जल हमारी रक्षा करें।

**यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम्॥**
**मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥3॥**

सर्वत्र व्याप्त होकर सत्य और मिथ्या के साक्षी वरुणदेव जिनके स्वामी हैं, वे ही रसयुक्ता, दीप्तिमती, शोधिका जल देवियाँ हमारी रक्षा करें।

**यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वेदेवा या सूर्जं मदन्ति॥**
**वैश्वानरो यास्वाग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥4॥**

राजा वरुण औऱ सोम जिस जल में निवास करते हैं। जिसमें विद्यामान सभी देवगण अन्न से आनन्दित होते हैं, विश्व व्यवस्थापक अग्निदेव जिसमें निवास करते हैं, वे दिव्य जलदेव हमारी रक्षा करें।

***